जिनागम

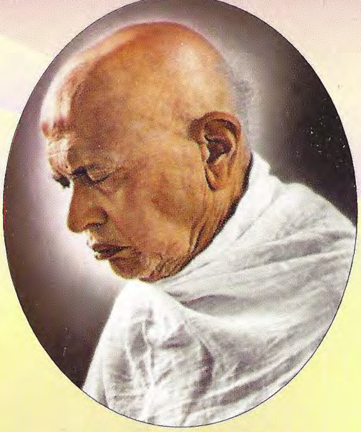

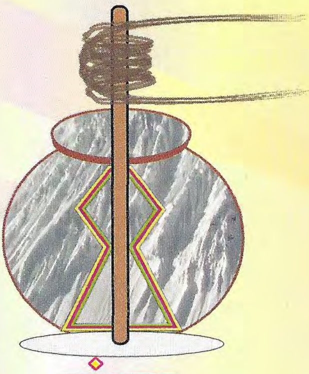

मंथन

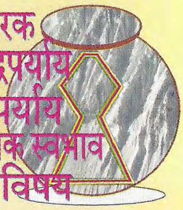

षट् कारक
कारणशुद्धपर्याय
क्रमबद्धपर्याय
स्वपर प्रकाशक स्वभाव
दृष्टि का विषय

जिनागम-सार

कहान गुरु की रिद्धि
जिनागमों की सिद्धि

प्रस्तुतिकरण

मुमुक्षुझ ऑफ नोर्थ अमेरिका (मोना)

श्री सद्गुरुदेव नी स्तुति

(हरिगीत)

संसार सागर तारवा जिनवाणी छे नौका भली,
ज्ञानी सुकानि मल्या बिना ये नांव पण तारे नहीं;
आ कालमां शुद्धात्म ज्ञानी सुकानि बहु-बहु दोह्यलो,
मुज पुण्य राशि फल्यो अहो ! गुरु कहान तूँ नाविक मल्यो.

(अनुष्टुप)

अहो भक्त चिदात्माना सीमंधर-वीर-कुंदना,
बाह्यांतर विभवो तारा, तारे नांव मुमुक्षुनां.

(शिखरणी)

सदा द्रष्टि तारी विमल निज चैतन्य निरखे,
अने ज्ञप्ति मांही दरव-गुण-पर्याय विलसे;
निजालम्बी भावे परिणति स्वरूपे जईमले,
निमित्तो वहेवारो चिद्घन विषे कांई न मले.

(शार्दूलविक्रीड़ित)

हेयुं सत्सत्, ज्ञान-ज्ञान धबके ने वज्रवाणी छुटे,
जे वज्रे सुमुमुक्षु सत्त्व झलके, परद्रव्य नातो तूटे;
राग-द्वेष रुचे न जंप न वले भावेन्द्रिमां-अंश मां,
टंकोत्कीर्ण अकंप ज्ञानमहिमा हृदये रहे सर्वदा.

(वसंततिलका)

नित्ये सुधाझरण चंद्र! तने नमुं हुं,
करुणा अकारण समुद्र ! तने नमुं हु,
हे ज्ञान पोषक सुमेघ ! तने नमुं हु,
आ दासना जीवन शिल्पी ! तने नमुं हु.

(स्रग्धरा)

ऊंडी ऊंडी, ऊउेथी सुखनिधि सतना वायु नित्ये वहंती,
वाणी चिन्मूर्ति ! तारी उर अनुभवना सूक्ष्म भावे भरेली,
भावो ऊंडा विचारी, अभिनव महिमा चित्त मां लावीलावी,
खोयेलुं रत्न पामुं- मनरथ मननो, पूरजो शक्तिशाली !

– रचयिता : पं. श्री हिम्मतलाल जेठालाल शाह

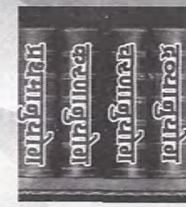

जिनागम

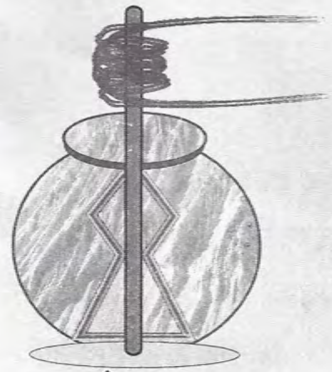

मंथन

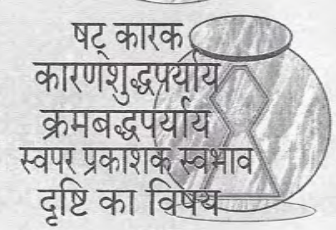

जिनागम-सार

कहान गुरु की रिद्धि जिनागमों की सिद्धि

प्रस्तुतिकरण
मुमुक्षुझ ऑफ नोर्थ अमेरिका (मोना)

प्रथम संस्करण : 1000 प्रति
कार्तिक अष्टाह्निका के पावन अवसर पर
(शिविर दिनांक **5** नबम्वर से **9** मार्च **2013** तक)

न्यौछावर : दैनिक चिंतन एवं मनन

प्राप्ति स्थान

१. **पूज्य श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट**
वेलतगांव रास्ता, लाम रोड,
कहान नगर, देवलाली-नासिक (महा.)

२. **MONA**
email : webmaster@jainism.us
Phone : 201-914-2894 (USA)

Printed by :
Jain Computers, Jaipur.
email- jaincomputers74@gmail.com
email- jaincomputers74@yahoo.co.in
Mob. 094147 17816.

अहो भाग्य !

अहो उपकार जिनवरनो, कुंदनो ध्वनि दिव्यनो,
जिन-कुंद-ध्वनि आप्यां अहो ! ते गुरु कहाननो।

अध्यात्मयुगस्रष्टा प्रात:स्मरणीय पूज्य गुरुदेवश्री को कोटि-कोटि प्रणाम।

पूज्य गुरुदेवश्री ने चारों ही अनुयोग के अनेकानेक शास्त्रों का गहरा मंथन कर के जिनागमों के साररूप पांच सिद्धांत – षट् कारक, क्रमबद्धपर्याय, कारणशुद्धपर्याय, ज्ञान का स्व-पर प्रकाशक स्वभाव और द्रष्टि का विषय हमें दिये हैं। यही पूज्यश्री कहानगुरु की रिद्धि है और जिनागमों की सिद्धि है।

"द्रष्टि का विषय और भेदविज्ञान की प्रक्रिया", "गुरु चिन्तन – पूज्य गुरुदेवश्री के नित्यक्रम के १७५ बोल" – इन विषयों पर दो शिविरों के बाद अब "**कहानगुरु की रिद्धि-जिनागमों की सिद्धि**" – इस विषय पर मुमुक्षुझ ओफ नोर्थ अमेरीका द्वारा तीर्थक्षेत्र देवलाली में आयोजित तृतीय शिविर के अवसर पर तैयार की गई इस लघु पुस्तिका को शिविरार्थियों के करकमल में भेंट करते हुये हम अहोभाग्य का अनुभव कर रहे हैं। इस शिविर का आयोजन लंदन, नायरोबी, दुबई, सिडनी, सिंगापुर आदि विदेशों में बसे हुये मुमुक्षुओं के सहयोगपूर्वक किया गया है, वह बात भी अत्यधिक प्रसन्नताजनक है।

इस शिविर की अनुमति देने के लिये तथा सर्व प्रकार की सहायता प्रदान करने के लिये हम पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली के ट्रस्टीगण के अत्यंत आभारी हैं। इस शिविर में पधारे हुए सभी विद्वानों की ओर हम कृतज्ञता प्रदर्शित करते हैं और शिविर में

भाग लेने के लिये दूर दूर से आये हुये सभी श्रोतागण भी हमारे धन्यवाद के पात्र हैं।

एक दिन में एक ही विषय पर पूज्य गुरुदेवश्री का सी. डी. प्रवचन, चार विद्वानों के इस पुस्तिका में बताये हुये बिन्दुओं अनुसार प्रवचन, तत्पश्चात् अन्य तीन विद्वानों द्वारा समीक्षा एवं उपसंहार और अंत में विद्वानों तथा श्रोताओं के बीच ज्ञानगोष्ठी – ऐसी नयी पद्धति इस शिविर में अपनायी गयी है। आशा है कि यह प्रयोग सभी शिविरार्थियों को प्रत्येक विषय सर्वांगरूप से समझने में सहायक होगा।

पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा इस युग में उद्घाटित इन पांच विषयों को यथार्थ रूप से समझ कर हर एक मुमुक्षु निज शुद्धात्मा का सच्चा और पक्का निर्णय करें और अपने आत्मा की प्रसिद्धि करके शाश्वत सुख की प्राप्ति करें– यही अभ्यर्थना।

– मुमुक्षुझ ओफ नोर्थ अमेरिका (मोना)

दैनिक कार्यक्रम

(५ नबम्वर से ९ नबम्वर २०१३)

क्र.	समय	कार्यक्रम
१.	प्रात: ०६.५० से ०८.००	अभिषेक और पूजन
२.	प्रात: ०८.०० से ०८.४५	नाश्ता
३.	प्रात: ०८.४५ से ०९.४५	पूज्य गुरुदेवश्री का सीडी प्रवचन
४.	प्रात: ०९.४५ से १०.००	विज्ञापन एवं ब्रेक
५.	प्रात: १०.०० से १०.४५	प्रवचन (विद्वान नं.१)
६.	प्रात: १०.४५ से ११.३०	प्रवचन (विद्वान नं.२)
७.	प्रात: ११.३० से ०२.१५	भोजन एवं आराम
८.	दोप. ०२.१५ से ०२.४५	चाय
९.	दोप. ०२.४५ से ०३.३०	प्रवचन (विद्वान नं.३)
१०.	दोप. ०३.३० से ०४.१५	प्रवचन (विद्वान नं.४)
११.	दोप. ०४.१५ से ०४.४५	भक्ति (महिला मण्डल)
१२.	दोप. ०४.४५ से ०६.००	भोजन
१३.	सायं ०६.०० से ०७.००	साधर्मी मिलन
१४.	सायं ०७.०० से ०८.००	मीमांसा एवं उपसंहार (विद्वान नं. ५,६,७)
१५.	सायं ०८.०० से ०९.००	ज्ञानगोष्ठि

विषयानुक्रमणिका

१. क्रमबद्ध और पुरुषार्थ	7
२. कारणशुद्धपर्याय	8
३. ज्ञान का स्व-पर प्रकाशक स्वभाव	9
४. पूज्य कहानगुरु कथित दृष्टि का विषय	11
५. षट् कारक	12

विद्वत्‌गण

१. पं. अभयकुमार जैन, देवलाली (निर्देशक)
२. पं. डॉ. उत्तमचंद जैन, छिंदवाडा
३. पं. चेतनभाई मेहता, राजकोट
४. पं. ब्र. हेमचंद जैन, देवलाली
५. पं. राकेश जैन, नागपुर
६. पं. भरतभाई शेठ, राजकोट
७. पं. रमणीकभाई सावला, देवलाली

क्रमबद्धपर्याय और पुरुषार्थ

गुरुवाणी : पूज्य गुरुदेवश्री का सी डी. प्रवचन (समयसार गाथा ३०८ से ३११)

प्राथमिक समझ :

१. क्रमबद्धपर्याय : व्याख्या
२. पांच समवाय : व्याख्या

विशेष समझ :

१. पुरुषार्थ का सच्चा स्वरूप : सत्य पुरुषार्थ और असत्य पुरुषार्थ।
२. पुरुषार्थ किस गुण की पर्याय है?
३. क्या क्रमबद्ध के स्वीकार से पुरुषार्थ का लोप होता है?
४. पर्याय की क्रमबद्धता के अनुसार पुरुषार्थ या पुरुषार्थ के अनुसार पर्याय की क्रमबद्धता?
५. क्रमबद्ध के निर्णय में अनंत पुरुषार्थ
६. क्रमबद्धपर्याय का स्वीकार और सम्यग्दर्शन की प्राप्ति

अन्य बिन्दुऐं :

क्रमबद्धपर्याय और पुरुषार्थ : आगम के आलोक में

ज्ञानियों की वाणी में ''क्रमबद्ध और पुरुषार्थ''

१. पूज्य गुरुदेवश्री के वचनामृत : बोल नं. ७७
२. ज्ञानस्वभाव और ज्ञेयस्वभाव बोल नं. ३४,१३३,१३६
३. स्वानुभूति-दर्शन : बोल नं. ३८५,६१७
४. द्रव्यद्रष्टिप्रकाश : बोल नं. २५५,२९४,६०८

कारणशुद्धपर्याय

गुरुवाणी : पूज्य गुरुदेवश्री का सी डी प्रवचन
(नियमसार गाथा १५)

प्राथमिक समझ :

१. कारणशुद्धपर्याय : व्याख्या
२. कार्यशुद्धपर्याय : व्याख्या

विशेष समझ :

१. कारणशुद्धपर्याय और कार्यशुद्धपर्याय में तफावत
२. कारणशुद्धपर्याय और एक समय की पर्याय में तफावत
३. पूज्य गुरुदेवश्री के मार्गदर्शन से बनाये गये कारणशुद्ध पर्याय को दर्शानेवाले चित्रपट की समझ
४. कारणशुद्धपर्याय विषयक समझ की आवश्यकता
५. ध्रुव में ध्रुव का प्रतिभास और निष्क्रियपने जानना क्या होता है?
६. कारणशुद्धपर्याय और द्रष्टि का विषय
७. क्या कारणशुद्धपर्याय छ ही द्रव्यों में और उनके सभी गुणों में होती है?

अन्य बिन्दुअें :

कारणशुद्धपर्याय – आगम के आलोक में

ज्ञानियों की वाणी में कारणशुद्धपर्याय

१. पूज्य गुरुदेवश्री के वचनामृत-बोल नं. १११
२. प्रवचन रत्नाकर-भाग ११, पृष्ठ १३७,१३८,१४७
३. प्रवचन नवनीत-भाग २, पृष्ठ १७५, १७६, १७७

ज्ञान का स्व-पर प्रकाशक स्वभाव

गुरुवाणी : पूज्य गुरुदेवश्री का सी डी प्रवचन
(कलश टीका, कलश नं. २७१)

प्राथमिक समझ :

१. ज्ञान का स्व-पर प्रकाशक स्वभाव : व्याख्या

विशेष समझ :

१. ज्ञान ज्ञेयों को किस तरह जानता है?
२. ज्ञेयाकार और ज्ञानाकार क्या है?
३. अरूपी ज्ञेयों का ज्ञेयाकार और ज्ञानाकार कैसा होता है?
४. क्या मिथ्यदृष्टि का ज्ञान एकान्त से पर-प्रकाशक होता है?
५. यदि हमारा ज्ञान स्व-पर प्रकाशक है तो हमें आत्मा जानने में क्यों नहीं आता है?
६. ''आत्मा पर को जानता है।'' क्या वह असद्भूत व्यवहारनय का कथन है? यदि है, तो व्यवहारनय अभूतार्थ-असत्यार्थ होने से ''आत्मा खरेखर (वास्तविकपने) पर को जानता नहीं है'' – यह बात सच ही है?
७. ''केवली भगवान निश्चय से स्व को और व्यवहार से लोकालोक को जानते हैं'' – क्या यह कथन बराबर है? श्री नियमसारजी की गाथाओं के आधार से इसका खुलासा कीजिये।

८. "आत्मा पर को जानता ही नहीं।" क्या यह कथन निरपेक्षपने सच्चा है या किसी अपेक्षापूर्वक सच्चा है या सच्चा ही नहीं है?

९. श्री समयसारजी में अमृतचंद्राचार्य ने लिखा है कि – "नास्ति सर्वोपि सम्बन्धः।" – क्या यह कथन ज्ञेय-ज्ञायक संबंध को भी लागू होता है?

१०. ज्ञेयों का झलकना, प्रतिभासना, जानने में आना – ये सब कथन क्या एकार्थवाची हैं या उनके अलग-अलग अर्थ होते हैं? क्या ये तीनों ज्ञानगुण की पर्याय है या अलग-अलग गुण की?

११. श्री समयसारजी की गाथा १७-१८ के परिप्रेक्ष्य में स्व-पर प्रकाशक स्वभाव का स्पष्टीकरण कीजिये।

१२. ज्ञान के स्व-पर प्रकाशक स्वभाव की सच्ची समझ से हमें आत्मा की अनुभूति कैसे होगी? इसके प्रयोग की विधि क्या है?

१३. दर्पण और अग्नि तथा दीपक और घटपट के उदाहरण से ज्ञान के स्व-पर प्रकाशक स्वभाव का स्पष्टीकरण कीजिये।

१४. "इन्द्रियज्ञान ज्ञान ही नहीं है"– इस वाक्य को ज्ञान के स्व-पर प्रकाशक स्वभाव के परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट कीजिये।

अन्य बिन्दुएं :

ज्ञान का स्व-पर प्रकाशक स्वभाव - आगम के आलोक में

ज्ञानियों की वाणी में ज्ञान का स्व-पर प्रकाशक स्वभाव

स्वानुभूति दर्शन : बोल २८

पूज्य गुरुदेवश्री कथित दृष्टि का विषय

गुरुवाणी : पूज्य गुरुदेवश्री का सी डी प्रवचन (स.गाथा-६)

प्राथमिक समझ :

१. दृष्टि का विषय : व्याख्या
२. दृष्टि के विषय की यथार्थ समझ से आत्मा की प्रसिद्धि

विशेष समझ :

१. द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव से दृष्टि के विषय का निरूपण
२. चार अंगुलियों के माध्यम से दृष्टि के विषय की समझ
३. क्या दृष्टि के विषय में पर्याय को शामिल करना आगम सम्मत है?
४. नव तत्त्वों के माध्यम से द्रष्टि के विषय का निरूपण
५. 'शुद्धातम का लो आधार, कहने की विधियाँ हैं चार।'

अन्य बिन्दुएं :

दृष्टि का विषय - आगम के आलोक में

ज्ञानियों की वाणी में कहानगुरु कथित दृष्टि का विषय :

१. पूज्य गुरुदेवश्री के वचनामृत बोल नं. - १७,८६,१०९
२. पूज्य बहनश्री के वचनामृत बोल नं.१००,२०१,२३७,२४३, ३४४, ३५३, ३८२
३. स्वानुभूति दर्शन बोल नं. २६७, २६८, ३०७, ६३४, ६३५
४. द्रव्यदृष्टि प्रकाश बोल नं. २,७५,९७,२८६, २८९,२९६
५. समयसार सिद्धि भाग ११-पृष्ठ ३११,५०२,५०३; भाग १२-पृष्ठ १२५,१२६; भाग ९-पृष्ठ ३८२
६. प्रवचन नवनीत भाग ३-पृष्ठ २३७, २३८

षट् कारक

गुरुवाणी : पूज्य गुरुदेवश्री का सी डी प्रवचन
(प्रवचनसार गाथा-१६)

प्राथमिक समझ :

१. षट् कारक- व्याख्या
२. भिन्न और अभिन्न षट् कारक

विशेष समझ :

१. सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में षट् कारक की यथार्थ समझ की आवश्यकता
२. षट् कारक और अकर्तापना
३. ४७ शक्तियों में कही गयी ६ कारक शक्तियाँ
४. पंचास्तिकाय : गाथा-६२
५. ''क्रमबद्धपर्याय'' के परिप्रेक्ष्य में ''षट् कारक''

अन्य बिन्दुएं :

षट् कारक - आगम के आलोक में

ज्ञानियों की वाणी में ''षट् कारक''

पूज्य गुरुदेवश्री के वचनामृत बोल नं.२१३
स्वानुभूति दर्शन बोल नं.४८९

शिविरार्थियों को नोट्स हेतु

“अखिल विश्व मुमुक्षु परिवार”

Unity is Divinty

“एकत्व ही सौन्दर्य है।”

“अनंतगुणस्वरूप आत्मा, तेना एकरूप स्वरूपने द्रष्टि मां लई, तेने (आत्मा ने) एकने ध्येय बनावी तेमां एकाग्रतानो प्रयत्न करवो -- ऐज पहेलामां पहेलो शान्ति सुखनो उपाय छे.”

– पुरुषार्थ प्रेरणामूर्ति पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी

MUMUKHUS OF NORTH AMERICA

dedicated to

"Carry on Kundkund - Kahan Tatvagyan to the End of Fifth Aara" by using Modern Technology.

CURRENT ACTIVITIES

- Adult Education
- Young Adult Education (YJPe, YJPg, YJPh)
- Children Education (Pathshala 608)
- Celebration of All Auspicious Ocassions
- Shibir-Sangoshti Planning
- Samooh Poojan, Pratrikraman & Dharmacharcha

PLANNED ACTIVITIES

- A new website "ourgurukahan.com" to act as a "gateway to all Kundkund - Kahan related websites"
- "GYAN" - Global Young Association of Jains to unite young mumukshus between the ages of 16 to 50 years
- Formation of ''अखिल विश्व मुमुक्षु परिवार'' New Volunteers having access to internet are most welcome !

CONTACT

email : webmaster@jainism.us
website : www.jainism.us